# जीवनीपरक स्रोतों में महिला विदुषियों का प्रतिनिधित्व : शासकीय विश्वनाथ यादव स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय पुस्तकालय दुर्ग के संग्रह के संदर्भ में

**विनोद कुमार अहिरवार**
लाइब्रेरियन एवं हेड
लाईब्रेरी साइंस डिपार्टमेंट,
गवर्नमेंट वी.वाई टी.पी.जी. ऑटो कॉलेज

**राजलक्ष्मी पाण्डेय**
असिस्टेंट प्रोफेसर
लाईब्रेरी साइंस डिपार्टमेंट,
गवर्नमेंट वी.वाई टी.पी.जी. ऑटो कॉलेज

**सारांश**

पुस्तकालय ज्ञान का खजाना होता है । यहां ज्ञान पुस्तकों के रूप में संग्रहीत होता है। पुस्तकालय के संग्रह में दो प्रकार के संग्रह होते हैं पहला पुस्तकों का संग्रह तथा दूसरा संदर्भ ग्रंथो का संग्रह । संदर्भ ग्रंथ सामान्य पुस्तकों से भिन्न होते है। इनमें दी गयी सूचनाओं का उपयोग उपयोगकर्ता लगातार अध्ययन करके प्राप्त नहीं करता । इनमें दी गयी सूचनाओं को संदर्भ के रूप में देखता है । संदर्भ ग्रंथों में जीवनीपरक संदर्भ स्रोतों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में जीवनीपरक स्रोतों में महिला विदुषियों के प्रतिनिधित्व की विवेचना चित्रांकन के संदर्भ में एवं वर्तमान स्थिति को प्रस्तुत किया गया है ।

**मुख्य शब्द** : अकादमिक पुस्तकालय , विद्यालय पुस्तकालय, महाविद्यालय पुस्तकालय, विश्वविद्यालय पुस्तकालय, संदर्भ स्रोत, जीवनीपरक स्रोत , महिला विदुषो,विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय

**अकादमिक पुस्तकालय**

अकादमिक पुस्तकालय या शैक्षणिक पुस्तकालय शैक्षणिक संस्थानों का हृदय होते है जिस प्रकार हृदय समस्त शरीर को रक्त संचरित करता है ठीक उसी प्रकार शैक्षणिक पुस्तकालय सम्बंधित संस्थान में ज्ञान का संचार करता है क्योकि पुस्तकालय ज्ञान का खजाना होता, पुस्तकों तथा अन्य स्रोतों में ज्ञान संग्रहित होता है। डा कृष्ण कुमार के अनुसार शैक्षणिक पुस्तकालय तीन प्रकार के होते है – विद्यालय पुस्तकालय, महाविद्यालय पुस्तकालय तथा विश्वविद्यालय पुस्तकालय।

विद्यालय पुस्तकालय में ही विद्यार्थियों में पुस्तकालय में पुस्तक पढने की प्रवृति की नीव पडती है। यहीं पर विद्यार्थियों को पुस्तकालय का अच्छा पाठक बनाया जा सकता है । महाविद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ शोध कार्य भी होते है । विद्यालय पुस्तकालय की तुलना में महाविद्यालय पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं की संख्या अधिक होती है तथा उनकी आवश्यकतायें भी अधिक तथा भिन्न होती है। इसी कारण इन पुस्तकालयों का उपयोग अधिक होता है । चूकि महाविद्यालयों में शोध कार्य भी होते है, इसीलिये इन पुस्तकालयों का संग्रह भी भिन्न होता है। यहां विभिन्न प्रकार के संदर्भ ग्रंथ जैस– शब्दकोष, विश्वकोश, भौगोलिक स्रोत, ग्रंथपरक स्रात वार्षिकी, निर्देशिकायें तथा जीवनीपरक स्रोत इत्यादि संदर्भ ग्रंथ संग्रहित होते है। यहां के उपयोगकर्ताओं तथा स्थानीय विशेषताओं के आधार पर इन संदर्भ ग्रंथों का चयन किया जाता है ।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय इन दानों प्रकार के पुस्तकालयों से आकार में बृहद होता है तथा यहां के उपयोगकर्ता एवं यहां का संग्रह भी अन्य शैक्षणिक पुस्तकालयों से भिन्न होता है । विश्वविद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन से अधिक शोध कार्य होते है जिसके कारण यहां के पुस्तक संग्रह का विकास भी होने वाले शोध कार्यो को ध्यान में रखकर किया जाता है ।

**संदर्भ स्रोत**

पुस्तकालयों में पुस्तकों के अलावा संदर्भ ग्रंथ भी होते है जिनका अध्ययन लगातार नहीं किया जाता बल्कि किसी संदर्भ या किसी विशिष्ट सूचना को देखने के लिये किया जाता है। वह सूचना किसी शब्द का अर्थ तथा उसका उपयोग इत्यादि के बारे में जानने के लिये हो सकती है या किसी स्थान से सम्बंधित वहां के पर्यटन स्थलों की जानकारी से सम्बन्धित सूचना हो सकती है । संदर्भ स्रोत संदर्भ सेवा की आत्मा तथा किसी ग्रंथालय की आधारभूत सामग्री होती है । डा. कृष्ण कुमार के अनुसार निम्न प्रकार के संदर्भ ग्रंथ होते है :–

1. शब्दकोश
2. विश्वकोश
3. जीवनीपरक स्रोत
4. वार्षिकी तथा पंचाग तथा विश्वकोषो के पूरक
5. भौगोलिक स्रोतःगजेटीअर,पथ–प्रदर्शक पुस्तक, एटलस, नक्से,तथा ग्लोब
6. निर्देशिकाएं
7. सामायिक स्रोत हेन्डबुक्स, मेनुअल, तथा अन्य सांख्यिकीय स्रोत ग्रंथपरक स्रोत एवं
8. दृश्य–श्रव्य स्रोत[1]

**जीवनीपरक स्रोत**

जीवनी को व्यक्तियों के जीवन के बारें में लिखित विवरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है । इसमें विगत एवं वर्तमान समय के महापुरूषों के जीवन परिचय का विवरण दिया जाता है । बायोग्राफी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के Bio तथा Graphies शब्दों से हुई जिसका अर्थ क्रमशः जीवन सम्बन्धी तथा लेखन होता है। अतः Biography का अर्थ व्यक्ति या व्यक्तियों के जीवन का अध्ययन करना होता है। जीवनी कोश एक बहुत ही अधिक लोकप्रिय स्रोत होता है जो कि पाठकों के प्रेरणा एवं मनोरंजन का एक सशक्त स्रोत होता है। इसमे महापुरूषों के जीवन से सम्बन्धित जानकारियां जैसे– उनकी जन्म एवं मृत्यु की तिथि,उनकी योग्यतायें उनका दर्जा, उनका योगदान तथा उनका पता इत्यादि को जीवनी परक स्रोतों में सम्मिलित किया जाता है । इस प्रकार जीवनी परक स्रोत तात्कालिक संदर्भ स्रोत होतें हैं, जो कि व्यक्तियों के बारें में आधार भूत जानकारियां उपलब्ध कराते हैं ।

भारत में प्राचीन काल से ही जीवन–चरित लिखने तथा उनका मौखिक वर्णन करने की परंपरा रही है। राजा महाराजा अपनी जीवनी लिखवाते थे । वैसे तो विभिन्न धार्मिक ग्रंथ जैसे पुराण, रामायण, इत्यादि में तो महापुरूषों तथा वीर पुरूषों की गाथायें मिलती है। इसी प्रकार विदशी धार्मिक ग्रंथों में भी महापुरूषों के जीवन–चरित का वर्णन मिलता है । अंग्रेजी में प्रमाणित जीवन–चरित सन् 1791 में बासवेल के द्वारा Life of Samuel Johnson साहित्यिक भाषा में लिखा गया और यहीं से आधुनिक जीवनीपरक ग्रंथ लिखने का श्रीगणेश होता है।[2]

के. एस. सुन्दरेश्वरन् के अनुसार जीवनी परक स्रोत तीन प्रकार के होते हैं–

1. व्यक्तिगत जीवनी
2. संस्मरणात्मक लेख और ग्रंथ और
3. आत्मचरित

**जीवनीपरक स्रोतों में महिला विदुषियों का प्रतिनिधित्व**

आज के इस पुरूष प्रधान समाज में महिला सशक्तीकरण की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है परन्तु महिलाओं को आज भी पुरूषों के बराबर का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका है, जबकि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान पुरूषों से कम नही है।

प्राचीन धर्म ग्रंथों – जैसे पराण, रामायण, महाभारत, इत्यादि में महान नारियों के जीवनपरक विवरणों को दिया गया है । सीता,पार्वती,अनसुईया, शबरी,गंगा, कुन्ती गांधारी, द्रापदी,, एवं अन्य कई महान नारियों को देवी का दर्जा देकर उनके जीवनपरक विवरणों को धर्म ग्रंथों में स्थान दिया गया है । भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक महान नारियों ने योगदान दिया जिनका जीवन परिचय भी जीवनपरक स्रोतों में सम्मिलित किया गया । स्वतंत्रता संघर्ष के समय महारानी लक्ष्मीबाई अंगजो से टकराई जिसकी वीरगाथा तथा जीवन से संबन्धित महत्वपूर्ण धटनाओं को सुभद्रा कुमारी चौहान ने काव्य रूप में प्रस्तुत किया ।

डा. राजकुमार ने अपनी पुस्तक **''महिला एवं विकास में लुत्फुन्निसा बेगम का जीवन चरित''** देते हुये लिखा है,कि जब उनके पति पर विपत्ति के पहाड टूट पडे तो घर के लागो ने विश्वासघात कर दिया तथा उन्हे त्याग दिया उस समय लुत्फुन्निसा ने अपने पति का साथ देकर अपने कर्तव्य का पालन किया था । जिसका जीवन चरित पाठन करने वालों को शिक्षा–प्रद है।[4]

कुमाऊ का मुख्य व्यवसाय कृषि है इसीलिये कुमाऊ कवियों ने लोक साहित्य में कुमाऊनी कृषक महिलाओं के चित्रण का उल्लेख करते हुये उनके जीवन का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत किया है । कुमाऊ की कृषक महिलाय मैदानी इलाके की कृषक महिलाओं की तुलना में अपेक्षाकृत ज्यादा कठिन परिश्रम करती हैं, तथा उनको अलग–थलग जीवन यापन करना पडता है।[5]

महिला सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में नैना लाल किदवई का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है । नैना लाल को हांगकांग एवं शंघाई बैंक कारपोरेशन के इन्वेस्टमेंट बैकिंग विभाग की भारत में उपाध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया था । वर्ष 2000 में 'फोरच्यून पत्रिका' में नैना का जीवनपरक विवरण देते हुय एशिया की तीसरी तथा 2003 मे दुनिया की सबसे शक्तिशाली बिजनेस महिला के रूप मे परिचित करवाया ।

डा रामकुमार अहिरवार के अनुसार उज्जयिनी जिसको अवन्ति के नाम से भी जाना जाता ह, में बौद्व धर्म की उपासिका बनी नारियों के उपदेशात्मक गाथांए समाज के लिये उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं। डा रामकुमार ने ''उज्जयिनी की बौद्व नारिया'' में महान बौद्व नारियों के जीवनीपरक विवरण दिये है । उन्होने अपनी पुस्तक में पेतालीस भिक्खुणी व उपासिकाओं क सचित्र जीवनीपरक विवरणो को संकलित किया है । उनके अनुसार पुस्तक में दिये गये जीवनीपरक विवरण शिलालेखों पुरालेखों एवं प्राचीन पुस्तकों से प्राप्त हुआ है ।[6]

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से यह बात सामने आती है कि प्राचीन काल से ही समाज की विदुषी महिलायों के जीवनी एवं जीवनीपरक विवरण लिखने को पुरूषो के समान ही महत्व दिया जाता था । नारियों को भी पुरूषो के समान जीवनपरक स्रोतो तथा अन्य ग्रंथों में महत्व दिया जाता था। उनके द्वारा किये गये वीरता के कार्यो तथा समाज हेतु उपयोगी कार्यो को ग्रंथों, शिलालेखों तथा पुरालेखों के माध्यम से समाज तक पहुंचाया जाता था । यह कार्य प्राचीन काल में तो होता रहा परन्तु मध्यकाल एवं आधुनिक में विदुषी नारियों के जीवनीपरक विवरण का लेखन प्रभावित होकर न्यून हो गया तथा जो विवरण दिया भी गया उसमें इन नारियों के द्वारा किये गये समस्त वीरतापूर्ण एवं महत्वपूर्ण कार्यो पर अच्छी तरह से प्रकाश नहीं डाला गया । परन्तु आज के युग में महिलायें पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है अतः महिलाओं की जीवनी

को ग्रंथों में सचित्र विवरण देना चाहिये , जिसका लाभ निश्चित ही समाज को होगा।

**विदुषी नारियों की जीवनी एवं जीवनीपरक विवरण की वर्तमान स्थिति**

हमारी सम्यता एवं संस्कृति के निर्माण में महिलाओं का योगदान उल्लेखनीय रहा है। उनके महात्मय का उल्लेख शास्त्रों में भी मिलता है । वेदों में महिलाओं के जीवन उनकी शिक्षा तथा उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यो का वर्णन दिया गया है। चार वेदों में महिला सम्बन्धी सैकडो मंत्र दिये गये हैं । वैदिक साहित्य मे सूर्यासावित्रि, सिकता निवावरी,, अपाला आत्रेयी आदि कुल 29 विदुषी महिलाओं का जिक्र किया गया है ।

ब्रिटिश काल में भी महिलाओं की षिक्षा एवं उनके कार्यो पर प्रकाश डाला जाता था। सन् 1916 में देष के पहले महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई जो आज नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय के नाम से विख्यात है। इस काल में महिलाओं के जीवनीपरक विवरणों को भी महत्व देकर लेखन किया गया ।

आधुनिक युग में आजादी के बाद महिलाओ की शिक्षा से लेकर उनके अन्य मामलों में लगातार जो गुणात्मक सुधार हुआ उसे किसी भी दृष्टि से सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। भारत में महिलाओ की प्रगति बहुत धीमी गति से हुई इस कारण महिलायें सामाजिक, आर्थिक, व सांस्कृतिक सभी क्षेत्रो भाग नहीं ले पायी। जिन महिलाओं ने समाज के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य किये भी उनके भी कार्यों पर जीवनीपरक स्रोतों के माध्यम से उचित प्रकाष नहीं डाला गया ।

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय दुर्ग में पुस्तकों की कुल संख्या 95778 है । जीवनीकोश तथा अन्य जीवनीपरक स्रोतों की कुल संख्या 787 है । इन जीवनीपरक स्रोतों का अध्ययन करने पर निम्न सारणी अनुसार तथ्य प्राप्त हुये :

**सरिणी कमांक 1**

| कुल जीवनीपरक स्त्रोतो की संख्या | पुरूषों के जीवनीपरक स्रोत | | | नारियों के जीवनीपरक स्रोत | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | सचित्र | चित्र रहित | कुल | सचित्र | चित्र रहित | कुल |
| 787 | 485 | 17 | 502 | 52 | 233 | 285 |

उक्त सारिणी का अवलोकन करने पर मालूम पडता है कि शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय दुर्ग के 95778 पुस्तकों में जीवनीपरक स्रोतो का प्रतिशत मात्र 0.82 प्रतिशत है। 787 जीपनीपरक स्रोतों मे से पुरूषों के जीवनीपरक स्रोत का बाहुल्य है जिनका प्रतिषत 63 से भी अधिक है जबकि नारियो के जीवनीपरक स्रोतो का प्रतिशत मात्र 36.21 है । यदि इन जीवनीपरक स्रोतो में इन महान व्यक्तित्वो के जीवन से सम्बन्धित पक्षों के बारे में चित्रांकन के बारे में विचार किया करे तो इसमें पुरूषों का प्रतिशत अधिक है । परूषा के 502 स्रोतो में से 485 मे चित्रांकन अच्छी तरह दिया गया है चित्रांकन का प्रतिशत 96 से भी अधिक है । जबकि महिलाओं के 285 में से मात्र 52 स्रोतो में ही चित्रांकन दिया गया है इसका प्रतिशत मात्र 18.24 ही है।

चित्रों के माध्यम से महान व्यक्तित्वों के कियाकलापो तथा उनके द्वारा किये गये वीरतापूर्ण कार्यो पर अच्छी तरह से प्रकाश डाला जा सकता है ; जैसे वीर सावरकर के द्वारा एकता को निरूपित करने के लिये माचिस की सभी तीलियों को एक साथ हथेली पर जलाने को चित्र द्वारा उनकी अधिकतर जीवनीयों में दिखया गया । सारिणी कमांक 1 का अध्ययन करने पर यह बात सामने आती है कि महान पुरूषों की तुलना में महान नारियों के चित्र बहुत ही कम, लगभग 18 प्रतिशत ही दिये गये है, यही नहीं चित्रों के माध्यम से निरूपित किये गये कार्यकलापों तथा वीरता के कार्यो में भी काफी अन्तर है । प्रायः महिलाओं के जोवनीपरक स्रोतों में एक ही मुद्रा में गहनो से श्रृंगारित किया हुआ दिखाया गया है या फिर के चेहरे का ही चित्र दिया गया है । उनको महापुरूषों जैसा कोई वीरता पूर्ण या महत्वपर्ण कार्य करते नहीं दिखाया गया। सारिणी कमांक 2 के द्वारा इस तथ्य को स्पष्ट किया जा सकता है :

| जीवनीपरक स्त्रोतो मेंकुल चित्रों की संख्या | पुरूषों के जीवनीपरक स्रोत में चित्रांकन की स्थिती | | | | नारियों के जीवनीपरक स्रोत में चित्रांकन की स्थिति | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | वीरता/ महत्वपूर्ण कार्यो को प्रदर्शित करने वाले चित्रांकन की संख्या | सामान्य चित्रों की संख्या | चित्र रहित | कुल चित्र | वीरता/ महत्वपूर्ण कार्यो को प्रदर्शित करने वाल चित्रांकन की संख्या | सामान्य चित्रों की संख्या | चित्र रहित | कुल चित्र |
| 587 | 398 | 87 | 17 | 485 | 5 | 47 | 233 | 52 |

**सारिणी कमांक 2**

उक्त तालिका के अनुसार महापुरूषों के 502 जीवनीपरक स्रोतों में से 485 में ही चित्रांकन किया गया है तथा इन चित्रांकन में से 398 में किये गये चित्रांकन में वीरतापूर्ण एवं महत्वपूर्ण कार्यो को करते हुये दिखाये गये चित्रांकन का प्रतिशत 82 से भी अधिक है जबकी महान नारियों के 285 जीवनीपरक स्रोतों में से केवल 52 में ही चित्रांकन किया गया । इसमें से मात्र 05 चित्रांकन में ही वीरतापूर्ण एवं महत्वपूर्ण कार्यों को करते हुये दिखाया गये चित्रण का प्रतिशत मात्र 9.6 ही है, जोकि बहुत ही न्यून है।

**निष्कर्ष :**

इस पूरे अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला विदुषियों के जीवन से सम्बन्धित तथ्यों को किसी न किसी रूप में प्राचीन समय से ही शिलालेखों तथा पुरातात्विक लेखों में एवं प्राचीन ग्रंथों जैसे मनुस्मृति, रामायण, महाभारत एवं वेद पुराणों में देने की प्रथा रही है मध्यकाल तथा मुगल काल में किसी न किसी रूप में महान नारियों के जीवनीपरक विवरणों का लेखन होता रहा ।

आधुनिक काल में ब्रिटिश कालीन भारत में महिलाओं को पुरूषों के समान महत्व दिया जाता था तथा उनकी शिक्षा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर विशष ध्यान

दिया जाता था । उनके जीवनीपरक विवरणों को भी दिया जाता था । उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यो को प्रलेखो के रूप में मुद्रित किया जाता था । आजादी के बाद भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु अनेक कार्य किये गये, परन्तु फिर भी ये सब कार्य महिलाओं को पुरूषों के समान दर्जा नहीं दे सके । आज यदि देखा जाय तो महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों से भी अच्छा एवं उल्लेखनीय कार्य किया हैं । परन्तु फिर भी उनके द्वारा किये कार्यो को उनके जीवनीपरक विवरणो में उचित ढंग से प्रदर्शित नहीं किया गया । वष 1975 को अर्न्तराष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाया गया परन्तु फिर भी महान नारियों के कार्यो को जीवनीपरक स्रोतो में उतना महत्व नहीं दिया गया ।

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर महाविद्यालय दुर्ग के पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या 95778 है । इतने विशाल संग्रह में से मात्र 787 जीवनीपरक ग्रंथ है। इनमें से महान नारियों के व्यक्तित्वों से सम्बन्धित स्रोतों की कुल संख्या 285 है । इन 285 जीवनीपरक स्रोतों में नारियों के जीवन चरित्र पर अच्छी तरह प्रकाश डालने के लिये मात्र 52 स्त्रोतों में ही चित्राकंन किया गया है । शेष 233 स्रोतो में चित्रांकन नहीं दिया गया है । जबकी महापुरूषों के जीवनीपरक स्रोतों में चित्रांकन की अधिकता है। महिलाओं के जिन 52 स्रोतों में चित्रांकन दिया गया उनमें से मात्र 5 स्रोत ही ऐसे हैं जिसमें महान नारियों को कुछ वीरतापूर्ण कार्य करते हुये दिखाया गया या फिर कुछ महत्वपूर्ण कार्यो को चित्राकंन के माध्यम से निरूपित किया गया हैं। शेष स्रोतों में नारियों को एक ही मुद्रा में आभूषणों में श्रृंगारित दिखाया गया । जबकि पुरूषों को वीरतापूर्ण कार्य करते हुय प्राचुरता से दिखाया गया है । जैसे वीर सावरकर को एकता का संदश समाज तक पहुचाने के लिये माचिस की समस्त तीलियों को हथेली पर एक साथ जलाते हुये दिखाया गया है ।

इस प्रकार हम इस अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष पाते है, कि महान नारियों को जीवनीपरक स्रोतों में जो स्थान मिलना चाहिये था वह अभी तक नहीं मिला है । जबकि आज नारियां पुरूषों की तुलना में किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है उनके द्वारा समाज के लिये उपयोगी अनेक महत्वपूर्ण तथा वीरता पूर्ण कार्य किये गये है । निश्चित ही महान नारियों के जीवनीपरक स्रोतों को उनके जीवन का आईना बनाने के लिये प्रत्येक पक्ष पर चित्रांकन के माध्यम से उचित प्रकाश डालना उपयोगी रहेगा ।

## संदर्भ सूची


1 Kumar, Krishna, "Reference Book and their Evaluation." Reference Service.2008. p. 23.

2 सुन्दरेश्वरन के. एस., ''जीवन कोश''. *सन्दर्भ सेवा,* 1997. पृ.231

3 सुन्दरेश्वरन के. एस., ''जीवन कोश''. *सन्दर्भ सेवा,*1997. पृ. 231

4 राजकुमार, ''लुत्फुन्निसा बेगम''. महिला एवं विकास, 2009 पृ250–255

5 राजकुमार, ''कृषक महिलायें''.महिला एवं विकास, 2009 पृ. 271

6 अहिरवार, आर. के., ''उज्जैनी की बुद्व नारियां ''. 2005